नाट्य कला का परिचय
(एकांकी, एकाभिनय, लोक नाट्य, नुक्कड़ नाटक)

इतिहास, शोध एवं ग्रन्थों से हमें जानकारियाँ मिलती है, कि जब मनुष्य का इस पृथ्वी पर जन्म हुआ था। उस समय कोई शाब्दिक भाषा का ज्ञान नहीं था। तब मनुष्य अपने सम्वाद या अभिव्यक्ति हेतु मुख मुद्राओं व शारीरिक हाव–भाव तथा ध्वनि आदि का उपयोग करता था।

उस काल में मनुष्य एक जंगली प्राणी था। वह गुफाओं एवं कन्दराओं में निवास करता था। जलवायु व मौसम के प्रभाव से बचने के लिए पेड़ों की पत्तियों तथा जानवरों की खाल की सहायता से अपने शरीर को ढँकता था। अपने पेट की भूख मिटाने के लिए व जंगलों तथा जंगली जानवरों पर निर्भर था, वह जंगली जानवरों का शिकार कर उनके मांस से अपनी उदरपूर्ति करता था।

शिकार के समय व जिन परिस्थितियों का सामना करता था उन क्षणों को वह फुर्सत के क्षणों में खेल–खेल में अपने समूहों में नृत्य व अभिनय के द्वारा दर्शाता था।

यही नृत्य और अभिनय उसके मनोरंजन के प्रमुख साधन थे। कालान्तर में धीरे–धीरे समय के साथ–साथ मनुष्य का बौद्धिक विकास हुआ और मनुष्य एक समूह बनाकर रहने लगा और एक सभ्य प्राणी बन गया। अब उसने अपने लिए एक भाषा की खोज भी कर ली थी। वह समूह में रहकर अपने परिवार का विस्तार करने लगा।

एक लम्बी अवधि में धीरे–धीरे कई सभ्यताओं के निरंतर विकास करते–करते मनुष्य आज के इस आधुनिक दौर में प्रवेश कर चुका है। उसकी यह यात्रा बहुत कठिन थी और प्रत्येक क्षण उसके बौद्धिक विकास ने उसके जीवन को बहुत सरल बना दिया। परन्तु उसका मूल स्वभाव अभिनय ही था जिसके माध्यम से वह एक दूसरे से संवाद स्थापित करता था।

आज जबकि मनुष्य इतना विकास कर चुका है, फिर भी उसकी जीवन शैली का मुख्य अंग अभिनय ही है। प्रत्येक क्षण हम सभी अपने संवाद हेतु भाषा के साथ–साथ हमारी मुख मण्डल की मुद्राओं का उपयोग साधारणतः अपनी प्रस्तुति में करते ही है। नाटक मंनोरजन से शुरू होकर आज सामाजिक,

राजनैतिक, व हमारी दैनिक जीवन शैली का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, जो जनजागृति के साथ ही साथ अपनी मनोरंजक भूमिका अदा कर रहा है।

जब लोग नाट्य विधा को समझने लगे उस प्रारम्भिक दौर में नाटकों के मुख्य पात्र नर व नारी हुआ करते थे। एक तरह से यही नाटक के मुख्य सूत्रधार अपने अभिनय के माध्यम से अपनी बात दर्शकों तक पहुँचाते थे। समय के साथ नाटक में बहुत बदलाव आ गये और यह विद्या कई चरणों से होते हुए आज के आधुनिक दौर/युग में प्रवेश कर चुकी है।

आज नाट्य विद्या को विधिवत् रूप से कई सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों के माध्यम से पढ़ाया व सिखाया जा रहा है, जिनमें एक प्रमुख संस्थान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दिल्ली है जो कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अन्तर्गत आता है। यहाँ से कई नामी हस्तियों ने अभिनय की बारीकियों को सीखकर संस्थान व अपना नाम देश व दुनिया में रोशन किया है इनमे कुछ मुख्य नाम अनुपम खेर, नसीरूद्दीन शाह, ओम शिवपुरी, रघुवीर यादव आदि–आदि अनेक कलाकार हुये है। जिन्होंने इस तरह की सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों से अध्ययन व अध्यापन कर अपनी अभिनय प्रतिभा के द्वारा नाट्य मंचों के अतिरिक्त फिल्मों में भी अपनी अलग पहचान बनायी है।

धर्म ग्रन्थों एवं वेदों व उपनिषदों और अन्य ग्रन्थों जैसे रामायण, महाभारत आदि में भी हमें नाटक व काव्य आदि से जानकारियाँ प्राप्त होती है। वात्सायन ने भी अपने ग्रन्थ "कामसूत्र" में चौसठ कलाओं की विवेचना की है जिसमें नाटक से सम्बन्धित सामग्री हमें प्राप्त होती है। इसी प्रकार भरतमुनि ने भी अपने नाट्यशाास्त्र (भरतमुनी का नाट्यशास्त्र) में विस्तार से नौ रस "नवरस" पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

एक विद्वान अभिनव गुप्त हुए है इन्होनें अपने ग्रन्थ "अभिनव भारती" की रचना की। इन्होंने काव्य के माध्यम से रस व अभिनय द्वारा पात्र के भावों व भावनाओं तथा दर्शक आदि पर विवेचना की है। इस प्रकार से अनेक विद्वानों ने अपने–अपने मत प्रस्तुत कर नाटक अथवा काव्य के द्वारा नाटक, दर्शक, पात्र, भाव, रस, मंच आदि के सन्दर्भ में अपने विचारों से अवगत कराकर रस सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है और इस निष्पत्ति व उत्पत्ति की समस्या को समझाने का समाधान किया है।

वर्तमान में नाटक एक व्यावसायिक युग में प्रवेश कर चुका है। जहाँ तकनीक बहुत अधिक प्रभावी

होने लगी है। एक अच्छे नाटक हेतु कुछ आवश्यक तत्व होते है जो नाटक को रूचिपूर्ण बनाकर और अधिक प्रभावी बनाते है।

"नाटक के लिए आवश्यक तत्व"

1. लेखन – नाटक का प्रमुख तत्व है विचार यदि विचार नहीं होगा तो हम नाटक की कल्पना नहीं कर सकते है। इसलिए सर्वप्रथम नाटक के लिए सर्वप्रथम एक विषय का चयन कर अपने विचारों को लेखन की सहायता से संग्रहित कर एक पाण्डुलिपि या स्क्रिप्ट तैयार करनी होती है। जिसमें विषय के अनुकूल पात्रों का चयन कर उनका उचित नाम व चरित्र आदि के सन्दर्भ में पूर्ण नियोजन करना होता है। और उसको व उसके चरित्र की कल्पना को बारीकी से अपनी लेखनी में संयोजित करना होता है।

2. वेशभूषा –

नाटक में किस–किस तरह के पात्रों या चरित्रों का चयन किया गया है, उसके अनुसार उनके वस्त्र आदि का चयन किया जाता है। जिससे कि जिस भी पात्र की लेखक ने कल्पना की है उस पात्र की आवश्यक सामग्री जिससे की दर्शक को उसकी वेश–भूषा से ही समझ आ जाये कि अमूक अभिनेता या अभिनेत्री किस चरित्र का निर्वाह कर रहा है।

उदाहरणतः – जैसे यदि एक भिखारी का चरित्र है तो उसके अनुकूल उसके वस्त्र आदि का चयन करना होता है जिससे की दर्शक उसे देखते ही पहचान जाये की अमूक पात्र भिखारी है अथवा पागल इसका बारीकी से निरीक्षण करना होता है।

3. रूप सज्जा –

नाटक का महत्वपूर्ण तत्व रूप सज्जा है। इसको मैक–अप भी कहते है। नाटक का पात्र जिस किसी भी चरित्र का अभिनय कर रहा है उसकी पूर्ण

सूक्ष्म जानकारी मैकअप मैन को होनी अति आवश्यक है। अमूक चरित्र के अनुकूल उसके चहरे को सजाया जाता है। अर्थात् यदि भिखारी का चरित्र है, तो उसके बाल–दाढ़ी आदि को अव्यवस्थित रूप से सँवारना होगा। इसके विपरीत यदि राजा का चरित्र है तो उसके अनुसार आभायुक्त चमक लिए हुए सुन्दर रूप सज्जा करनी होगी। जिससे दर्शक को चरित्र समझने में कठिनाई न होने पाये।

4. मंच सज्जा –

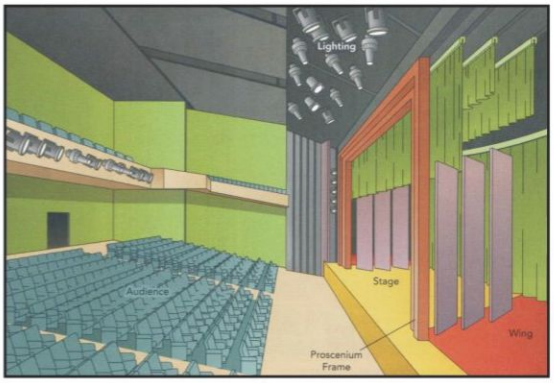

जहाँ पर नाटक खेला जाता है उस स्थान को मंच या नाटक गृह कहते है। जो कि सामने से अर्थात् दर्शकों की ओर चौड़ा तथा पीछे की ओर संकरा होता है। मंच को कथावस्तु या कहानी के अनुकूल इस तरह से व्यवस्थित करना होता है। क्योंकि मंच अभिनेता या पात्र घटनाओं के प्रभाव से उस दृश्य को आत्मसात अर्थात् भ्रमवश अभिनेता को ही चरित्र के रूप में मानने लग जाता है। इसमें मंच व्यवस्था प्रमुख भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी राजदरबार का दृश्य मंच पर जीवन्त करना है, तो राजा का सिंहासन मंच के मध्य में व्यवस्थित करना होता है। सिंहासन सुन्दर एवं आकर्षक होना चाहिए जिससे कि राजा का वैभव दिखाई दे सके। उसके पीछे मखमल आदि के सजावटी पर्दे राजा का राजचिन्ह राज पताका (झण्डा) आदि दर्शाया जाना चाहिए मंच के दोनों और द्वारपाल आदि इस प्रकार व्यवस्थित करना कि वह स्थान राजदरबार की ही अनुभूति दे।

5. संगीत –

संगीत नाटक की आत्मा होती है यह नाटक का अतिमहत्वपूर्ण अंग होता है। इसलिए एक अच्छे नाटककार को संगीत की भी समझ होनी चाहिए। क्योंकि नाटक को संगीत के द्वारा ही प्रभावोत्पादक बनाया जा सकता है। नाटक में प्रस्तुत भावों या रस सुख–दुःख, हास्य व्यंग्य, भय, क्रोध, वीभत्स, प्रेम, करूणा आदि को संगीत के द्वारा और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। संगीत का नाटक में दो तरह से उपयोग किया जा सकता है। संगीत मण्डली को मंच पर एक कोने में स्थान देकर अथवा रिकार्ड करके भी दृश्य के अनुसार उसका प्रयोग कर भी नाटक में भाव उत्पन्न किया जा सकता है।

6. प्रकाश व्यवस्था –

जीवन में प्रकाश का बड़ा महत्व है हमे सभी चीजें प्रकाश अर्थात् लाईट के कारण ही दिखाई देती है और

प्रकाश ही हमें अपनी और आकर्षित करता है। मंच पर प्रकाश आदि की व्यवस्था इसके अन्तर्गत आती है। प्रकाश के माध्यम से ही नाटक में विभिन्न प्रभाव उत्पन्न किये जाते है। अलग–अलग दृश्यों में अलग–अलग रंगों की लाईट का प्रयोग किया जाता है, इसमें मंच में जहाँ पर कार्य व्यवहार चल रहा है उस भाग में प्रकाश तथा बाकी भाग को प्रकाश विहीन रखकर दृश्य को प्रभावी बनाया जा सकता है। जिससे की दृश्य जीवन्त हो उठे।

प्रकाश व्यवस्था नाटक का अति महत्वपूर्ण अंग है। इसलिए प्रकाश की व्यवस्था हेतु एक अलग तकनीशियन की आवश्यकता होती है जो कि मंच पर न होते हुए भी अपने प्रकाश के प्रभाव से दृश्य को सारगर्भित बनाता है। इसलिए इसके लिए अनुभवी तकनीशियन की आवश्यकता होती है। यह नाट्य–निर्देशक द्वारा कहानी के अनुसार पूर्व में प्रकाश संचालक को समझाई जाती है और इसकी पात्रों के साथ पूर्व में तैयारी या रिहर्सल की जाती है।

आज नाटक में दिन–प्रतिदिन नई–नई तकनीकों का समावेश होता जा रहा है जिसमें कम्प्यूटर तथा प्रोजेक्टर आदि की सहायता से मंच पर बहुत ही यथार्थ असंभव समझे जाने दृश्य भी मंच पर दिखाये जा सकते है। यथा एक सुन्दर नाट्य प्रस्तुति हेतु नाटक को उपरोक्त सभी तत्वों का आपस में सामंजस्य अति आवश्यक है। तब ही एक सफल नाटक प्रस्तुत किया जा सकता है।

नाट्य प्रस्तुति के पूर्व की तैयारी – नाटक की प्रस्तुति के पूर्व में नाटक के सभी तत्वों सहित कई–कई बार दौहरान अर्थात् रिहर्सल की जाती है। जिसमें संवाद बोलना, चरित्र के अनुसार चलना, बैठना, आदि–आदि का निर्देशक के बताये अनुसार पात्रों को करना होता है। जिससे की प्रस्तुत के समय पात्र संवाद नहीं भूले तथा नाटक हास्यास्पद नहीं हो।

चूंकि नाटक एक जीवन्त रचनात्मक कार्य है। इसमें पात्र और दर्शक आमने–सामने होते है, इसलिए उनको ध्यान में रखते हुए पूर्व में हर तरह की तैयारी कर लेनी चाहिए वरना नाटक प्रभावी नहीं हो पायेगा। इय हेतु सभी पात्रों व तकनीशियन के मध्य पूर्व में ही कार्य बाँट दिये जाते है। और उन सभी से यह अपेक्षा की जाती है कि सभी अपने–अपने कार्य को पूरी लगन व निष्ठा के साथ करेंगे नहीं तो एक की भी गलती पूरे नाटक या दृश्य को खराब कर सकती है। इसी प्रकार नाटक के पात्र अपने–अपने चरित्र का गहन अध्ययन करते हैं, जिससे की नाटक जीवन्त हो सके। अच्छी प्रस्तुति हेतु पात्रों को नव रसों का तथा तकनीकों का ज्ञान आवश्यक है। इसके द्वारा ही पात्रों के अभिनय से दर्शकों तक चरित्रों का प्रभाव पूरी तरह से पहुँच सके।

कुछ प्रमुख नाटक की प्रमुख विधाएँ जो प्रचलित है वे इस प्रकार है–

एकांकी –

एकांकी नाटक में नाटककार द्वारा कहानी को एक अंक या दृश्य के द्वारा दिखाया जाता है। इसकी समय सीमा लगभग (10) दस मिनट से (30) तीस मिनट तक हो सकती है।

एकांकी का अर्थ – "एक ही अंक में पूरा होने वाला (दृश्य काव्य या नाटक) छोटा नाटक जिसमें एक ही अंक हो एकांकी नाटक की श्रेणी में आता है।"

अर्थात् इसमें कहानी को एक ही अंक में पूरा करना होता है। उदाहरण – (1) रामायण एक बहुत बड़ा ग्रन्थ है और इसमें कई घटनाओं का विस्तार से वर्णन है। परन्तु यदि हमें एकांकी नाटक में प्रस्तुत करना है तो इसमें रामायण की कोई भी घटना को एक अंक में दिखाते हुए उस घटना का उद्देश्य दर्शकों तक पहुँचाना जैसे सीता स्वयंवर, सीता हरण, लक्ष्मण को शक्ति बाण लगना आदि।

इसी प्रकार महाभारत का कोई भी एक अंक या घटना को किसी भी चरित्र को मुख्य रूप से केन्द्र में रखकर उस पात्र के मुख्य चरित्र को प्रमुखता से दर्शाते हुये उसके मनोभावों का दृश्यांकन करना जैसे द्रोपदी का चीर–हरण, कर्ण कवच कुण्डल दान, भीम की प्रतिज्ञा आदि दिखाना।

ये एकांकी नाटक लघु नाटकों की श्रेणी के अन्तर्गत आते है। जिनकी अवधि लगभग 30 मिनट होती है। इनके विषय अधिकतर सामाजिक, राजनीतिक या धार्मिक हो सकते है। जिससे कि समाज में संदेश जाये। एकांकी नाटकों में पात्रों की संख्या बहुत अधिक नहीं होती है केवल मूल भावना को ध्यान में रखते हुये उसे प्रभावोत्पादक बनाई जाती है। इसमें संवाद भी बहुत बड़े–बड़े नहीं होते है। इस तरह के नाटकों का एक मात्र उद्देश्य कम समय में अपनी बात या संदेश दर्शकों के मध्य में पहुँचाना होता है।

एकांकी नाटकें के द्वारा रचनात्मकता आती है। इसलिए इस प्रकार के नाटकों को विद्यार्थियों को अपने विद्यालय में खेलने चाहिए। इन नाटकों की सहायता से एक दूसरे विद्यार्थी के मध्य सामंजस्यता बनाने में मदद मिलती है।

चूंकि एकांकी नाटकों की समय सीमा कम होती है ये लघु नाटकों के अन्तर्गत आते है इसलिए इनकी प्रस्तुति विद्यार्थियों द्वारा प्रार्थना सभा के दौरान कर सकते है। जिससे बाकी विद्यार्थियों में भी जागरूकता आये और एक अच्छे नागरिक बन सके।

नाटक विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का एक सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। नाटक की वजह से विद्यार्थी में आत्म विश्वास का संचार होता है। वह अपने आपको अच्छे से प्रदर्शित कर सकता है। विद्यार्थी स्वयं

अपनी समस्याओं को लेकर अपनी ही कक्षा के छात्रों के साथ स्वयं नाटक लिखकर हिन्दी के अध्यापक या अध्यापिका की सहायता से विद्यालय में एक रचनात्मक वातावरण का निर्माण कर सकता है।

विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक से कहानी लेकर नाट्य प्रस्तुति कर सकता है अथवा पुस्तकालय से अच्छे एकांकी की पुस्तक लेकर कुछ अच्छे लेखक उपेन्द्रनाथ 'अश्क' अशोक चक्रधर ..... आदि के नाटकों का मंचन अपने विद्यालय में कर सकते है।

एकाभिनय –

अभिनय नाटक का प्रमुख तत्व होता है। एकाभिनय का अर्थ "जब एक ही अभिनेता मंच पर विभिन्न चरित्रों का अभिनय करता है वह एकाभिनय के अन्तर्गत आता है।" एकाभिनय अभिनय की एक ऐसी विधा है जो आज के समय में बहुत प्रचलित हो गयी है। इसे (Solo Act) भी कहते है। यह विद्या भी आवश्यकता के अनुसार ही जन्मी है। पूर्व में अभिनेता को जो नाटक–नौटंकी करते थे उन्हें समाज में उतना सम्मान नहीं मिलता था। इसलिए नाट्य अभिनय को बहुत कम लोग व्यवसाय के रूप में अपनाते थे। परन्तु धीरे–धीरे पत्र–पत्रिकाओं और टी.वी. इन्टरनेट में बहुत परिवर्तन कर दिया है। जिससे इस क्षेत्र में भी बहुत अच्छे घरानों के युवा इसे व्यवसाय के रूप में अपनाकर ख्याति अर्जित कर रहे है।

क्योंकि नाटक में बहुत सारे पात्रों एवं तकनीशियनों की आवश्यकता होती है क्योंकि किसी भी कहानी में बहुत सारे पात्र होते है। और नाटक मे आज भी कम ही लोगों की अभिरूचि होती है। इसलिए नाटक मे पात्रों हेतु अभिनेता आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाते है, इस कारण अलग–अलग पात्रों का अभिनय एक ही अभिनेता द्वारा किया जाता है। आगे चलकर इसे एकाभिनय का विकास हुआ। एकाभिनय में एक ही कलाकार विभिन्न पात्रों का अभिनय करता है। जैसे हम भी प्रायः अपने आम जीवन में हँसी–हँसी में अन्य अनेक व्यक्तियों की नकल करते है। छोटे बच्चे मजाक–मजाक में दादाजी का चश्मा लगाकर, छड़ी लेकर दादाजी की ही तरह चलना, बोलना तथा उनकी तरह व्यवहार आदि क्रिया कलाप करते है। साथ ही साथ अपना स्वयं का चरित्र भी अभिनीत करते है, इसी तरह से एकाभिनय में भी विभिन्न पात्रों की कल्पना कर उनका अभिनय एक ही अभिनेता के द्वारा किया जाता है।

एकाभिनय में सहपात्र के रूप में अन्य अनेक सामग्री जैसे – वेश–भूषा, संगीत तथा प्रकाश व अन्य वस्तुओं का उपयोग कर मंच पर खड़े–खड़े ही एक पात्र से दूसरे पात्र के चरित्र में प्रवेश कर उसका अभिनय भी वही पात्र अपनी चाल, अपने संवाद बोलने का तरीका तथा मुख मुद्राओं के द्वारा अलग पात्र

की कल्पना को दर्शकों के मध्य अपने स्वयं के माध्यम से पहुँचाता है।

आज भागदौड़ भरी जिन्दगी में एकाभिनय का चलन अधिक हो चला है इसमें चूंकि बहुत अधिक कलाकारों की आवश्यकता नहीं होती इसलिए जिस किसी भी अभिनेता में नाटक के प्रति अधिक दीवानगी होती है वही इस ओर अग्रसर होता है। जिससे अभिनेता के अभिनय क्षमता का भी पता चलता है।

लोक नाट्य –

साधारण जन द्वारा साधारण जन के लिए किया गया मनोरंजक नाटक लोक नाट्य कहलाता है। अर्थात् स्वयं के द्वारा स्वयं के समूह के लोगों की स्वंय के लोगों के लिए किया गया मनोरंजक अभिनय प्रस्तुति लोक नाट्य के अन्तर्गत आता है।

लोक नाट्य का जन्म जन सामान्य के मध्य से ही परम्परागत रूप से होता है। यह कला किसी विद्यालय में नहीं सीखी जाती यह तो पीढ़ी दर पीढ़ी चलने वाली कला है। इसमें दादा से पिता, पिता से पुत्र और इसी तरह से आगे से आगे बढ़ती चली आती है।

लोक नाट्य में अधिकतर वीर पूजा की भावना के साथ कला, संगीत नृत्य, अभिनय और काव्य का समन्वय रहा है। जहाँ कवि, लेखक और अभिनेता अपने काव्य संगीत और अभिनय के द्वारा गोगा जी, पाबूजी राठौड, पृथ्वीराज रासो, तेजाजी, अमरसिंह डूँग जी, झुँवार जी, भूरा जी आदि वीरों के पौरूष के गुण गाते और अभिनय करते है। यहाँ अधिकतर ग्रामीण जन दर्शक रूप में अभिनय के माध्यम से अपने आदर्श वीरों के रंगमंच पर दर्शन करना चाहते है।

लोक नाट्य में लोक देवी–देवता आदि के चमत्कारों व वीरता के किस्से कहानियों का प्रभाव अधिक रहता है। जिससे जनमानस की भावनाऐं जुड़ी रहती है। लोक नाट्यों में लोक देवी–देवताओं और वीर पुरूषों के पात्रों का अभिनय जन सामान्य में से ही कुछ लोगों द्वारा किया जाता है। उनकी वेश–भूषा आदि भी उन लोक देवी–देवताओं की तरह की ही होती है। इन प्रस्तुतियों में ये मुखौटों का भी उपयोग करते है। इसमें ये उनके जीवन चरित्र को नाच–गाकर अभिनीत किया जाता है। इसमें संगीत हेतु लोक वाद्य यंत्रों का ही उपयोग किया जाता है। यह पूरी तरह से संगीतमयी प्रस्तुति होती है। ये आमतौर पर लोकोत्सवों, त्यौहारो या फसल कटाई के अवसरों पर खेला जाता है। ये कला पहले पूरी तरह से अव्यवसायिक होती थी। परन्तु आधुनिकता की अन्धी दौड़ में हम हमारे वीर पुरूषों और लोक देवताओं की ओर से उदासीन हो गये है, इसलिए कुछ लोगों ने इसे आज व्यवसाय के रूप में अपनाकर देश–विदेश में

ख्याति अर्जित की है।

लोक नाटक के लिए विशेषतः आधुनिक मंच की आवश्यकता नहीं होती है ये अपनी कला का प्रदर्शन बहुत छोटी सी जगह में भी प्रभावी ढंग से कर सकते है। ये अधिकतर तमाशा शैली में किया जाता है। इसके अन्तर्गत संवाद से लेकर वाद्य यंत्रों आदि का बजाना तथा अपने आप को अभिनय के लिए तैयार करना आदि सभी कार्य स्वयं के द्वारा ही किये जाते है। लोक नाट्यों में रामलीला, रासलीला, रास, कठपुतली, ख्याल, तुर्रा कलंगी आदि विद्याओं के द्वारा प्रभावी प्रस्तुति दी जाती है। आदिवासी और ग्रामीण जन–जीवन का अभिन्न अंग है। अलग–अलग जाति व कबीलों में अलग–अलग देवी–देवताओं और उनकी मान्यता के अनुसार ये अपनी विभिन्न प्रचलित शैलियों की प्रस्तुति देते है।

नुक्कड़ नाटक –

नुक्कड़ नाटक, नाटक की ऐसी विधा है जिसमें पात्र व दर्शक में सीधा संवाद होता है। आधुनिक इन्टरनेट के युग में नुक्कड़ नाटक अपनी अलग विशेष पहचान स्थापित कर चुका है। कहने का अर्थ है कि आज की दुनिया का संवाद का सबसे सशक्त माध्यम है।

जन जागृति और लोकमत तैयार करने में नुक्कड़ नाटक ने अपना अलग स्थान बना लिया है। भारत में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से राजनीतिक व सामाजिक जन जागृति की शुरूआत का श्रेय सफदर हाशमी को जाता है। जिन्होंने अपने जीवन काल में बहुत नुक्कड़ नाटक किये और अपने विचारों से जनता को जागृत किया।

राजस्थान में भी नुक्कड़ नाटकों के क्षेत्र में बंकर रॉय और अरूणा रॉय की समाजिक संस्था एस. डब्ल्यू.आर.सी. तिलोनिया तथा अजमेर की सामाजिक संस्था अपना थियेटर संस्थान अजमेर का नाम अपनी अलग पहचान बना चुका है इस संस्थान के श्री योबी जार्ज नुक्कड़ नाटकों के क्षेत्र में राजस्थान में बहुत ख्याति अर्जित कर चुके है।

नुक्कड़ नाटक में किसी विशेष प्रकार की वेशभूषा आदि की आवश्यकता नहीं होती है ना ही किसी विशेष मंच की। नुक्कड़ नाटक गाँवों और शहरों के नुक्कड़ों चौराहों, चौक–चौपालों आदि पर जहाँ लोगों का आना–जाना लगा रहता है वहाँ किया जा सकता है। नुक्कड़ नाटक के लिए पाँच, छः कलाकारों की आवश्यकता होती है, तथा वाद्य यंत्रों में केवल ढोलक व हारमोनियम ही पर्याप्त होता है। कलाकार साधारण वेश–भूषा में ही रहते है।

सबसे पहले नाच–गाकर एक भूमिका अर्थात् माहौल तैयार किया जाता है। और कुछ मंनोरजक हँसी–मजाक के द्वारा लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया जाता है इसके साथ ही हल्के वातावरण में ही नाटक में अभिनेताओं के द्वारा अपने विचार लोगों तक सरल तरीके से पहुँचा दिये जाते है। इसमें सभी पात्र सांकेतिक अभिनय से चरित्र प्रस्तुत करते है। पुरूष ही महिला चरित्र का अभिनय कर सकते है। केवल एक दुपट्टे के माध्यम से सिर ढक कर महिला पात्र दर्शाया जा सकता है।

कभी–कभी चलते नाटक में भीड़ में से कुछ लोग प्रश्न भी पूछ सकते है, जिसे तुरन्त कलाकार जवाब देकर लोगों को अपनी प्रस्तुति से सार्थक बनाता है। इस तरह के नुक्कड़ नाटकों का आयोजन सामाजिक संस्थाओं द्वारा व सरकार द्वारा भी प्रायोजित किये जाते है। जिससे कि सरकार की नीतियों का लाभ जनता तक पहुँच सकता है। तथा समाज में व्याप्त बुराईयों को भी हम नुक्कड़ नाटक के द्वारा समाज के सामने ला सकते है।

जाने समझे और करे – नाटक संवाद का एक सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा आप अपने सहपाठियों की टीम (समूह) बनाकर विद्यालय की समस्याओं आदि पर अपने विचार से लेखन करे, पात्रों का चयन करे, और अपने हिन्दी के अध्यापक/अध्यापिका की सहायता से नाटक खेला जा सकता है।

इसके लिए नाटक की कोई भी शैली अपना सकते है। फिर वो एकांकी हो, एकाभिनय हो, लोक शैली हो अथवा नुक्कड़ नाटक शैली आपका उद्देश्य तो केवल अपनी अभिनय प्रतिभा द्वारा अपने विचारों को दूसरे विद्यार्थियों और लोगों के मध्य रखकर अपनी समस्याओं आदि से परिचित करा सकते है।

महत्वपूर्ण बिन्दु :

नाटक का लेखन सरल भाषा में होना चाहिए जिससे कि सभी उसे आसानी से समझ सके। एक नाटक में केवल एक ही विषय या समस्या को मुख्य केन्द्र में रखकर नाटक की रचना करनी चाहिए। पात्रों का चयन चरित्र के अनुसार ही करना चाहिए। क्योंकि विद्यालय की अपनी सीमाएँ होती है, इसलिए साधारण और सादगीपूर्ण व कम चीजों के उपयोग द्वारा अधिक प्रभाव दिखाने की कोशिश करनी चाहिए। नाटक एक रचनात्मक विधा है इसलिए इसके द्वारा आप अपने विद्यालय में अलग पहचान बना सकते है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. एकांकी नाटक का अर्थ है–

(अ) एक पात्र (ब) एक अंक

(स) एक कहानी (द) एक कविता

2. नुक्कड़ नाटक खेला जा सकता है–
   (अ) घर पर (ब) आधुनिक मंच पर
   (स) चौराहों और चौपालों पर (द) अकेले में
3. नाट्यशास्त्र के रचयिता है–
   (अ) भरतमुनि (ब) अभिनव गुप्त
   (स) आनन्द वर्धन (द) भट्ट नायक
4. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय स्थित है–
   (अ) जयपुर में (ब) दिल्ली में
   (स) मुम्बई में (द) पूना में
5. लोक नाट्य का सम्बन्ध है–
   (अ) राजा से (ब) भगवान से
   (स) जनसाधारण से (द) एक परिवार से

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. अभिनव भारती के लेखक कौन है?
2. अभिनय करने वाले को क्या कहते है?
3. जिस चरित्र का अभिनेता अभिनय कर रहा होता है उसे क्या कहते है?
4. रूप सज्जा क्या है?
5. दर्शक किसे कहते है?
6. नट–नटी क्या है?
7. मंच किसे कहते है?
8. सफदर हाशमी कौन थे?
9. वाद्य यंत्र क्या है?
10. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय किस मंत्रालय के अधीन आता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. नाट्य लेखन क्या है?
2. एकांकी किसे कहते है?
3. एकाभिनय से आप क्या समझते है?
4. लोक नाट्य से आपका क्या अभिप्राय है?
5. मंच सज्जा से क्या अर्थ है?

6. नुक्कड़ नाटक किसे कहते है?
7. संवाद क्या होता है?
8. अभिनय किसे कहते है?
9. नाटक में वेश–भूषा का क्या महत्व है?
10. प्राचीन काल में मनोरंजन के मुख्य साधन क्या थे?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. नाटक के लिए आवश्यक तत्वों को विस्तार से लिखिये।
2. नुक्कड़ नाटक क्या है?इसकी आवश्यकता व इससे कार्य प्रभाव को समझाइये।
3. नाटक से आप क्या समझते है?विस्तार पूर्वक समझाइये।
4. एकाभिनय क्या है?यह क्यों प्रचलन में आया विवेचना कीजिये।
5. नाटक सम्वाद का एक सशक्त माध्यम है। विवेचना कीजिये।

उत्तरमाला बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. ब 2. स 3. अ 4. ब 5. स